





# गोरखपुर महोत्सव 2025 का हुआ रंगारंग शुभारंभ

अवधनामा संवाददाता

गोरखपुर, गोरखनगरी में प्रतिवर्ष खिचड़ी पर्व के पहले आयोजित होने वाले गोरखपुर महोत्सव 2025 का पर्यटन मंत्री योगीराज सिंह ने दो प्रैव प्रज्ञल कर रखने का उद्घाटन किया। महोत्सव 10 से 16 जनवरी तक चलेगा। महोत्सव का समाप्ति सीएम योगी के हाथों होगा।

रंगारंग आयोजन के साथ शुभारंभ को गोरखपुर महोत्सव का आयाज हो गया। प्रदेश के पर्यटन मंत्री जगवीर सिंह ने इसका उद्घाटन किया तो इस दौरान उहोने मंच से संस्कृति, सभ्यता, सनातन परंपरा और प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुंभ की खबर चर्चा की। कहा कि भारत की परंपरा सनातन भी है, और गोरखपुर महोत्सव के माध्यम से भी काम है। जहाँ से देश दुनिया को गोरखपुर महोत्सव के माध्यम से भी बड़ा संदर्भ जाने वाला है। पर्यटन मंत्री ने कहा कि भारत की पहचान उक्ती संस्कृति और सभ्यता से होती है। जिसको मिटाने के लिए मुगलों



और अंगेजों ने बहुत प्रयास किया, लेकिन हमारी जो सभ्यता, संस्कृति और सनातन परंपरा है, वह आज भी काम है। यहीं वजह है कि 144 साल बाद जब प्रयागराज में भव्य और दिव्या कुंभ का आयोजन होने जा रहा है तो पूरी दुनिया की निगहें इस पर टिकी हुई हैं। यह लोगों के लिए शोध का विषय बना हुआ है, ऐसे में हम सभी उत्तर प्रदेश वासियों का यह धर्म है कि

प्रयागराज कुंभ में आने वाले हर देशी-विदेशी नागरिकों का हम बढ़ाकर सम्मान करें। उहोंने अपना अतिथि मानवर आदर में, जिससे उत्तर प्रदेश के गौतम की चर्चा पूरी दुनिया में हो। मंत्री ने कहा कि गोरखपुर महोत्सव के आयोजन का माध्यम से जो एक और गोरखपुर में पर्यटन और सांस्कृतिक, गतिविधियों के प्रचार-प्रसार के उत्तरार्थ गति प्राप्त होगी, वहाँ दूसरी ओर आगन्तुक देशी-विदेशी पर्यटकों सहित यशोनीय जनता को भी एक ही ध्यान पर कला, संस्कृति एवं गीत संगीत और खेल कृत का अद्भुत समागम प्राप्त होगा। गोरखपुर महोत्सव 2025 के अंतर्गत पिछले बीं भाग में भव्य और दिव्या कुंभ का आयोजन होने जा रहा है तो पूरी दुनिया की निगहें इस पर टिकी हुई हैं। यह लोगों के लिए शोध का विषय बना हुआ है, ऐसे में हम सभी उत्तर प्रदेश वासियों का यह धर्म है कि

संस्कार भारती ने कुमुद जी के योगदान को याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।



अवधनामा संवाददाता

के, हृदय में अमर रहेगा श्री कुमुद जी की चरणाङ्गें हमेशा अमर रहेंगी, और उनका साहित्य हमेशा समाज में, कला साधक, मार्गदर्शक, पथ प्रसरक, स्मृतिशेष, आदरणीय श्री अयोध्या प्रसाद कुमुद जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न हुई। संस्कार भारती के कला साधकों ने, समाजीय कुमुद जी के योगदान को और समर्पण को याद किया, उनके द्वारा संस्कृत में योगदान हमेशा याद रखेंगे, और गर्व योगदान हमेशा याद रखेंगे। जिसकी सूचना जो संवाददाता ने कहा कि संस्कार भारती-संस्था कला साहित्य को समर्पित संस्था है, और इसे श्री कुमुद जी जैसे महान् योगदान ने अपने मानविकी से संचिन्चा है। संस्था उनका योगदान हमेशा याद रखेंगी, और गर्व योगदान हमेशा याद रखेंगी। जनवरि जालौनी (उर्जा) के जिसकी कोषाध्यक्ष श्री जानेन्द्र कुमार जी ने, अपने भाव संगोत्तमय मंच के माध्यम से आदरणीय श्री कुमुद जी को याद करते हुए श्रेष्ठाओं एवं कला साधकों तक पहुंचाये।

राजपूत कर्णी सेना ने सचिव एवं बीड़ीओं के खिलाफ उपजिलाधिकारी कायमगंज को ज्ञापन सौंपा

फर्स्टखाबाद अवधनामा संवाददाता। फर्स्टखाबाद की तस्वीरी कायमगंज स्थित श्री राशीदी राजपूत कर्णी सेना के द्वारा उपजिलाधिकारी कायमगंज को संचिव एवं कायमगंज के खिलाफ ज्ञापन सौंपा।

## सामूहिक दुष्कर्म के मानले में तीन को नेजा जेल

अपेक्षी/गौरीगंज। कोतवाली अंतर्गत में एक गांव की एक नावालिम लड़की की साथ हुए सामूहिक दुष्कर्म के मानले में युवती ने अपनी अपरिधियों को जिसका उत्तराधिकारी करता रखा। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता को मेडिकल कराया और कोर्ट में बद्यान दर्ज करवाये के बाद गोरखपुर महोत्सव को नेजा जेल दिया है। 26 दिसंबर 2024 को 13 वर्षीय किसीने को चार युवकों ने घर में बधक बनाकर तीन दिनों तक दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने 1 जनवरी 2025 के परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने





## चुनाव आयोग के जवाब

चुनाव आयोग ने राजधानी दिल्ली के विधानसभा चुनाव की तरीखें घोषित कर दी हैं। सियासी तापमान लगातार बढ़ेगा। भाजपा का बहुत कुछ दाव पर है, क्योंकि वह 26 साल से दिल्ली अर्द्धराज्य की सत्ता से बाहर है। इस बार भी भाजपा के चुनावी पोस्टर पर प्रधानमंत्री मोदी का चित्र छपा गया है। साफ है कि पार्टी के पास मुख्यमंत्री के चेहरे लायक कोई नेता नहीं है। प्रधानमंत्री के चेहरे पर एक अर्द्धराज्य के लिए बोट मांगना ही असंगत और राजनीतिक कमजोरी है। दूसरी तरफ केजरीवाल और आम आदमी पार्टी (आप) लगातार चौथी बार सत्ता के लिए जनादेश मांग रहे हैं, लेकिन इन 'कट्टर ईमानदार' चेहरों पर भ्रष्टचार के दाग भी उभर आए हैं। 'आप' के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल समेत बड़े नेता, सांसद, विधायक जेल की हवा खा चुके हैं, लिहाजा 'आप' का चुनावी अभियान सबालिया है, लेकिन केजरीवाल चुनावी दोड़ से बाहर नहीं हैं। दरअसल दिल्ली बेहद शक्तिशाली, संसपन्न और जागरूक महानगर है। यहां की साक्षरता दर 88 फीसदी है। प्रति वर्षिक आय 4.6 लाख रुपए सालाना है। दिल्लीवालों के पास करीब 1.70 करोड़ स्मार्ट फोन हैं और 70 फीसदी से अधिक लोग इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं। जाहिर है कि दिल्ली का जनादेश किसी सामान्य राज्य या क्षेत्र से अभिन्न होता है। ऐसे चुनाव की तरीखें घोषित करने से पूर्व चुनाव आयोग ने कई सवालों, आपत्तियों, सदेहों और झुट के गुब्बारों के जवाब देना उचित समझा, क्योंकि आयोग देश के प्रति जवाबदेह है और स्पष्टीकरण देना उसकी संवैधानिक प्राथमिकता भी है।



લાલિત ગગા

को छीनता है, समाज पहुँचाता है, कानून उन्हें करता है और अपराध तस्करी में बल, धोरण इस्तेमाल के जरिए शोषित है। मानव तस्करी कई यौन तस्करी, बाल यौन विद्युत बंधन, जबरन बाल और बाल सैनिकों की शामिल है। यह पुरुष व्यक्तियों और बच्चों देश के अंदर दोनों जगतों तस्करी के खिलाफ कालिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय किए जाने अपेक्षित है।

री जागरूकता दिवस हर मनाया जाता है। यह दिन खिलाफ़ अधिकारियों के दासता के खिलाफ़ लाए मनाया जाता है। यह के अपराध, त्रासदी एवं न आकर्षित करता है जो दुनियाभर में मानव जीवन, परिवारों और समुदायों को डाकवानी, खौफनाक एवं त्रासद अधेरी दुनिया में धकेलता है। मानव तस्करी लाखों लोगों की आजादी और सम्मान को अनगिनत नुकसान और सुशासन को कमज़ोर को बढ़ावा देता है। मानव आधारी या जबरदस्ती के घण एवं उत्पीड़न शामिल होने में हो सकती है जिसमें तस्करी, जबरन मज़दूरी, ल मज़दूरी, घेरलू दासता अवैध भर्ती और उपयोग महिलाओं, द्रायंसेंडर को सीमाओं के पार और प्रभावित करता है। मानव न्यून और नीतियां बनाने के ग्रीष्म स्तर पर व्यापक प्रयास

वैश्विक स्तर पर, मानव तस्करी के शिकार पाँच व्यक्तियों में से एक बच्चा हैं हालांकि अप्रौढ़ा का और ग्रेटर मेकांग जैसे गरीब क्षेत्रों और उप-क्षेत्रों में, तस्करी के शिकार लोगों में से अधिकांश बच्चे ही हैं। इस बीच, दुनिया भर में मानव तस्करी के शिकार लोगों में से दो तिहाई महिलाएँ हैं। मानव तस्करी एक वैश्विक समस्या है और दुनिया के सबसे सर्वानाक अपराधों में से एक है, जो दुनिया भर में लाखों लोगों के जीवन के लिये अभिशाप है और सरकारों पर एक बदनुमा दाग एवं कलंक है। मानव तस्कर दुनिया के सभी कोनों से महिलाओं, रुसों और बच्चों को धोखा देते हैं और उन्हें हर दिन शोषणकारी अंधेरी परिस्थितियों एवं दुनिया में धकेलते हैं। जबकि मानव तस्करी का सबसे वीभत्स रूप यौन शोषण है, हजारों पीड़ितों को जबरन श्रम, घरेलू दासता, बाल मजदूरी एवं भीख मांगने के लिये मजबूर किया जाता है और ऐसे पीड़ितों के अंगों को निकालने के उद्देश्य से भी तस्करी की जाती है। अंतरराष्ट्रीय एन्जीओ शोध के अनुसार, पापुआ न्यू गिनी के लगभग 30 प्रतिशत यौन तस्करी के शिकार 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे हैं, जिनमें से कुछ की उम्र 10 वर्ष से भी कम है। कथित तौर पर कतिपय परिवार या जनजाति के सदस्य यौन तस्करी या जबरन मजदूरी करवाते हैं। कुछ माता-पिता बच्चों को सड़क पर भीख मांगने या सामान बेचने के लिए मजबूर करते हैं, और कुछ अपनी बेटियों को कर्ज चुकाने, समुदायों के बीच विवादों को सुलझाने या अपने परिवारों का समर्थन करने के

लिए विवाह या बाल यौन तस्करी के लिए बेदेते हैं या मजबूर करते हैं। दुनियाभर में हर साल करीब 6 लाख से लाख लोगों की तस्करी होती है। दुनियाभर में पागए सभी मानव तस्करी के पीड़ितों में से 5 प्रतिशत वयस्क महिलाओं की संख्या है। भारत में वर्ष 2019 में, सरकार ने 5145 मानव तस्करी के पीड़ितों और 2505 मानव तस्करी के संभावित पीड़ितों की पहचान किए जाने की जानकारी दी जोकि वर्ष 2018 में पहचान किए गए 394 मानव तस्करी पीड़ितों और 1625 मानव तस्करी के संभावित पीड़ितों की तुलना में बढ़ी थी। इसके आगे भी मानव तस्करी की घटनाओं में लागत बढ़ रही है। भारत में वर्ष 2010 में राष्ट्रपूर्ण की घोषणा के अनुसार, प्रत्येक जनवरी को राष्ट्रीय गुलामी और मानव तस्करी रोकथाम माह के रूप में नामित किया गया है। मानव तस्करी की बढ़ती शर्मनाक घटनाओं ने सर्वेदनहीन होते समाज व जासदी को उजागर किया है। इन घटनाओं व अभिभावकों एवं समाज की सर्वेदनहीनता और कूरता के रूप में देखा जा सकता है, वहीं आजाना

के अमृत काल में भी मानव-तस्करी की विनैनी मानसिकता के पांव पसारने की विकृति को सरकार की नाकामी माना सकता है। सरकार को बच्चों से जुड़े कानूनों पर पुनर्विचार करना चाहिए एवं बच्चों के प्रति घटने वाली ऐसी संवेदनहीनता की घटनाओं पर रोक लगाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

इस देश में मानव तस्करी के जबन्ध अपराध के रूप में बच्चों के साथ जो हो रहा है उसकी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी। उहें खरीदने-बेचने और उनसे भीख मांगाने का धंधा, उनके शरीर को अपांग बनाने का काम, खतरनाक आतिशबाजी निर्माण में बच्चों का उपयोग, उनके साथ अमानवीय व्यवहार, तंत्र-मंत्र के चक्र में बलि चढ़ते मासूम बच्चे और उनका यौन शोषण। देश के भविष्य के साथ यह सब हो रहा है। लेकिन जब सरकार को ही किसी वर्ग की फिक्र नहीं तो इन मासूमों की पीड़ा को कौन सुनेगा? इस बदलाती में जीने वाले बच्चों की संख्या जहां देश में लाखों में है, वहीं जमते ही बच्चों को बेच देने की घटनाएं भी रह-रह कर नये बन रहे समाज पर कालिख पौते हुए अनेक सवाल खड़े करती हैं। लाखों बच्चे कुपोषण का किशकार मिलेंगे, लाखों बेघर, दर-दर की ठोकर खाते हुए आधुनिकता की चकाचौंधि से कोसों ढूँ, निरक्षर और शोषित। बच्चों को बेच देने एवं तस्करी की घटनाएं कई बार ऐसी परते में गुंथी होती हैं जिनमें समाज, परंपरागत धारणाएं, गरीबी और विवशता से लेकर आपराधिक संजाल तक के अलग-अलग पहलू

ज्ञानमिल होते हैं। समाज में आज भी लड़के एवं लड़की को लेकर संकीर्ण एवं अमानवीय सोच व्यास है, ज्ञारखण्ड में एक दंपति को पहले से तीन बेटियां थीं। सामाजिक स्तर पर मौजूद रूद्रदिव्यों से सचालित धारणा के मुताबिक उस दंपति को एक बेटे की जरूरत थी। यानी तीन बेटियां उसकी नजर में महत्वीन ही कि उससे बेटे की भरपाई हो सके। इसलिए उसने ऐसी सौदेबाजी कराने वाले मानव तस्करों एवं दलालों के जरिए किसी अन्य महिला से उसका नवजात बेटा खरीद लिया। यानी मन में बेटा नहीं होने के अभाव से उपजे हीनताबोध और कुट्ठा की भरपाई के लिए कोई व्यक्ति पैसे के दम पर गलत रस्ता अपनाने से भी नहीं हिचकता। इसके अलावा, मानव तस्करी करने वाले पिरोह दूरदराज के इलाकों में और खासतौर पर गरीबी की पीड़ा झेल रहे लोगों के बीच अपने दलालों के जरिए बालक एवं बालिका खरीदने के अपराध में लगे रहते हैं। ज्ञारखण्ड, ओडिशा, बिहार जैसे राज्यों के गरीब इलाकों में ऐसे तमाम लोग होते हैं, जिन्हें महज जिंदा रहने के लिए तमाम जदोजहाद से गुजरना पड़ता है। विश्व की बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनते भारत की सतह पर दिखने वाली अर्थव्यवस्था की चमक की मामूली रोशनी भी उन तक आखिर क्यों नहीं पहुंच पाती है? मानव तस्करी की बढ़ती घटनाओं में बच्चों एवं बालिकाओं को बेचे और खरीद जाने में जितने लोग, जिस तरह ज्ञानमिल होते थे, वह नये बनते भारत के भाल पर एक बदनुमा दाग है।

# सामूहिक भागीदारी से आदर्श गांव का निर्माण संभव

**सुमन**

किसी भी देश के विकास की संकल्पना केवल महानगरों और औद्योगिक क्षेत्रों की संख्या से ही नहीं होती है बल्कि इसमें गांव की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। विशेषकर ऐसा गांव जिसे आदर्श गांव की संज्ञा दी जा सके। एक आदर्श गांव वह है जहां लोगों को बुनियादी सुविधाएं, सामाजिक सद्व्यवहार, शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ साथ विकास और रोजगार के क्षेत्र में भी अवसर उपलब्ध हों। वास्तव में, एक आदर्श गांव की परिभाषा केवल बुनियादी ढांचे या संसाधनों के विकास तक ही सीमित नहीं होती है बल्कि इसमें सभी वर्गों के लोगों का विकास भी होता है। साथ ही, इसमें समृद्धि, आत्मनिर्भरता और आपसी सहयोग की भावना भी शामिल होती है। ऐसा ही एक गांव राजस्थान के अजमेर जिला स्थित धुवालिया नाड़ी है। जहां सामूहिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण न केवल सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक हैं बल्कि इनमें अधिकतर इसका लाभ उठकर विकास की ओर अग्रसर हैं।

अजमेर से तीस किमी दूर समल्पण पंचायत

धुवालिया नाडा रस्यूलपुरा पंचायत का एक आसपास है। यहां अनुसूचित जनजाति भी के मी हैं। वही स्वास्थ्य के थेट्रो में भी रहते हैं। धुवालिया नाड़ा में संघालित प्राथमिक स्वास्थ्य संफार्दि का भी विशेष ध्यान रखा जाता है।

भ्रम दूर हो गए। गांव वालों का कहना था कि आबादी की दृष्टिकोण से भले ही हमारा गांव छोटा है लेकिन यहां के लोग योजनाओं के बारे में जानते हैं और हमें विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ भी मिलता है। हमने देखा कि इस गांव की सड़क पक्की है। जिससे आवागमन के साधन उपलब्ध हैं। एक आदर्श ग्राम में शिक्षा के मौलिक अधिकार को प्राथमिकता दी जाती है। जहां बच्चों, विशेषकर लड़कियों को गुणवत्तार्थी शिक्षा प्रदान की जाती है। यहां एक प्राथमिक और एक 12वीं कक्षा तक का स्कूल है, जिससे अधिकांश विद्यार्थी गांव में ही रहकर 12वीं कक्षा तक पढ़ाई करते हैं।

इसका सबसे बड़ा लाभ गांव की लड़कियों को होता है जिन्हें पढ़ाई के लिए गांव से बाहर नहीं जाना पड़ता है। इस संबंध में गांव के 50 वर्षीय मेवाताल सिंह बताते हैं कि पहले की तुलना में अब इस गांव के अभिभावकों में शिक्षा के प्रति रुचान बढ़ा है। वह अपने बच्चों की

है। जिसकी कुल आबादी 650 के है। वहीं कुछ घर अल्पसंख्यक समुदाय इस संबंध में तारा बाई कहती है कि संचालित हो रहा है बल्कि यहां साफ-क नागरिक स्वस्थ जीवन जी सके। है। वहीं कुछ घर अल्पसंख्यक समुदाय के भी हैं। वहीं स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी यहां अच्छी पहल देखेने को मिलती। इस संबंध में 65 वर्षीय तारा बाई कहती है कि ध्रुवालिया नाड़ी में संचालित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र न केवल सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है बल्कि यहां साफ-सफाई का भी विशेष ध्यान रखा जाता है ताकि बीमारियां न फैलें और प्रत्येक नागरिक स्वस्थ जीवन जी सके। वह कहती है कि गांव के अधिकांश लोग कृषि कार्य में लगे हुए हैं, जिसमें आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल कर कृषि की बेहतर पद्धतियों को अपनाने में किया जाता है। लेकिन रोजगार के मामले में कुछ बेहतर किया जाना चाहिए ताकि यहां के लोगों को कमाने के लिए शहर जाने की ज़रूरत न पड़े। इसके लिए गांव में ही रोजगार के अवसर प्रदान कर उनकी वित्तीय स्थिति में सुधार किया जा सकता है।

इस संबंध में गांव के एक सामाजिक कार्यकर्ता भंगर मिठ कहते हैं कि किसी भी

समृद्धि के लिए जो भी करना होता है वह करने को तैयार रहते हैं। ग्राम पंचायत के पास नागरिक सेवा का अधिकार है। जिसके माध्यम से धुवालिया नाड़ा गांव के सबसे गरीब और कमजोर व्यक्ति को लाभ पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। वह बताते हैं कि पंचायत की ओर से इस बात का प्रयास किया जाता है कि गांव में सभी के कागजात पूरे हों ताकि उन्हें योजनाओं का लाभ प्राप्त करने के लिए इधर-उधर भटकना न पड़े। आदर्श गांव की परिकल्पना के बारे में 12वीं की छात्रा श्रेया कहती है कि हमारे गांव में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता है। ग्रामीण स्वयं ही गांव को साफ रखते हैं और कचरे का उचित निस्तारण करते हैं। जिससे यहां अन्य गांव की तुलना में सफाई अधिक नज़र आएगी। इसमें सापूर्हिक भागीदारी की काफी अहम भूमिका होती है।

एक आदर्श गांव में जल, जंगल और जमीन जैसे प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग और संरक्षण किया जाता है। जो धुवालिया नाड़ा में देखने को मिलती है। गांव में जल संरक्षण के प्रयास किये जाते हैं। इसके अलावा पेड़-पौधे लगाने और पर्यावरण की रक्षा पर भी जोर दिया जाता है। एक आदर्श गांव वह है जहां लोगों को जीवन की बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हों, वे आत्मनिर्भर हों, परस्पर प्रेम और सम्मान रखें और अपने संसाधनों का

**कार्टनिरस ऐन ने इतिहास रचा!**

अमरीकी कार्टूनिस्ट ऐन टेल्नेस को शौर्य पारितोष से नवाजा जाना चाहिए। पुलिट्जर विजेता बड़ी हिमती और बहादुर पत्रकार बनकर विश्व पटल पर उभरी। हमारी प्रेरक बनी। क्या किया उसने? मशहूर अमेरिकी दैनिक 'दि वाशिंगटन पोस्ट' में 2008 से व्यंग्य चित्रकार थी (17 वर्षों से)। हाल ही के राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की विजय पर उसने कार्टून बनाया। वाशिंगटन पोस्ट के मालिक जेफ बेजोस को ट्रंप के चरणों पर नतमस्तक होते दर्शाया। जबकि वे ट्रंप की पराजय को अटल निश्चितता कहते रहे।

**के. विक्रम राव**

ऐन टेल्जेस पुलित्जर पुरस्कार विजेता  
अमेरिका में राष्ट्रपति पद की शपथ लेता  
हुए उन्होंने कार्टून बनाया। इसमें उन्हें  
जेफ बेजोस समेत कई अन्य दिग्गजों  
सामने घुटने टेकते हुए चिप्रित करता।  
वॉशिंग्टन पोस्ट ने नहीं छापा तो टेल्जे

जेता चित्रकार हैं और अपने तीखे का  
थ लेने जा रहे डोनाल्ड ट्रंप और उनका  
उन्होंने अमेज़ॉन के संस्थापक और  
गजों को कथित तौर पर नवनिवाचिया  
रता एक कार्टून बनाया। मालिक के  
टेल्जेस ने इसे स्वतंत्र प्रेस के लिए र

नूनों के लिए बेहद मशहूर हैं।  
भावी कार्यकाल पर कटाक्ष करते  
द वाणिंगटन पोस्ट के मालिक  
राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मूर्ति के  
खिलाफ इतने बोल्ड कार्टून को जब  
तरनाक बताते हुए नौकरी छोड़ दी।

थे श्री पाली नादिरशाह रायटर जो बाद में गुजरात के पुलिस महानिदेशक हुये। खाकी वर्दीधारी थे, पर बौद्धिक माने जाते थे। वर्ष से पारस्ती थी। मुझ पर अभियोग चला था कि डायनामाइट द्वारा इन्दिरा गांधी सरकार को हमने दहशत में लाने की साजिश रची थी। भारत सरकार पर सशस्त्र युद्ध का ऐलान किया था। सजा में कांसी मिलती।

मैंने अपने जवाब में डीआईजी से पूछा कौन सा दैनिक आप पढ़ते हैं? वे बोले, दि टाइम्स ऑफ इण्डिया। बड़ौदा में तब मैं उसी का ब्यूरो प्रमुख था। मेरा दूसरा सवाल था, इस अठारह पृष्ठाले अखबार को पढ़ने में 25 जून के पूर्व (जब सारे समाचार बिना सेसर के छपते थे) कितना समय आप लगाते थे? उनका संक्षिप्त उत्तर था, यही करीब बीस मिनट। मेरा अगला और अन्तिम सवाल था,

वाशिंगटन पोस्ट अखबार का काठूनस्ट एन टेल्सेस पुलितजर पुरस्कार विजेता चित्रकार हैं और अपने तीखे कार्टूनों के लिए बेहद मशहूर हैं। अमेरिका में राष्ट्रपति पद की शपथ लेने जा रहे डोनाल्ड ट्रंप और उके भावी कार्यकाल पर कठाक्ष करते हुए उन्होंने कार्टून बनाया। इसमें उन्होंने अमेजॉन के संस्थापक और द वाशिंगटन पोस्ट के मालिक जेफ बेजेस समेत कई अन्य दिग्जों को कथित तौर पर नवनिवाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मूर्ति के सामने घुट्टे टेकते हुए चित्रित करता एक कार्टून बनाया। मालिक के खिलाफ इन्हे बोल्ड कार्टून को जब वॉशिंगटन पोस्ट ने नहीं छापा तो टेल्सेस ने इसे स्वतंत्र प्रेस के लिए

का मूर्त क सामन घुटन टकत हुए दिखाया था। ऐसा माना जा रहा है कि यहां मिकी माउस के जरिए एबीसी न्यूज की ओर इशारा किया गया था जो डिज्नी के स्वामित्व में है। हाल ही में एबीसी न्यूज चैनल ने ट्रॅप को एक मानवानि मामले के तहत 15 मिलियन डॉलर देने का समझौता किया है।

और दूसरे तकनीक के दिग्गजों को अमेरिका के नए-नवेले राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रॉप के सामने घुटनों के बल बैठे हुए दिखलाया गया है। एक तरह से इन्हें ट्रॉप की एक विशालकाय तस्वीर के सामने निर्झगड़ाते हुए पेश किया गया, जहां वे झोरे भर पैसे लिए खड़े हैं।

महान पाच जला म कद रहा  
और सेंसरशिप का खुले आम  
विरोध भी किया। तभी का एक  
प्रसंग भी है।

पुलिस की हिरासत में मुझ कैदी के साथ  
(22 मार्च 1976) सबाल-जवाब के दौरान  
एक गुजराती डीआईजी साहब ने ताना मारा  
प्रेस सेंसरशिप (25 जून 1975) लागू होते  
ही देशभर के पत्रकार पटरी पर आ गये थे।  
आपको अलग राग अलापने की क्यों सूची?  
कटाक्ष चुटीता था। मैंडिया कर्मियों से अमूमन  
ऐसा प्रश्न पूछने की ढिठ्ठी कम ही की जाती  
है। तैश में पत्रकारी-स्टाइल में प्रतिकार मैं कर  
सकता था। मगर हथकड़ी लगी थी। प्रश्नकर्ता

आर अब? रायटर साहब बाल, बस आठ या नौ मिनट। तब पटरी से मेरे उतर जाने का कारण मैंने उन्हें बताया, आप सरीखे पाठक से छीने गये ग्राहक मिनटों को वापस दिलाने के लिये ही मैं जेल में आया हूँ। बस पूछताछ यहीं समाप्त हो गई। मगर सी.बी.आई. तथा तीन प्रदेशों के पुलिसवाले मेरा कच्चमर निकालते रहे। हवालात में हैलिकाप्टर (पंखे से टांगना) बनाते, रातदिन जागरण कराते। मेरे जीवन की रेखा लम्फी थी अतः इन्दिरा गांधी (20 मार्च 1977) रायबरेली से चुनाव में बोटरों द्वारा पराजित कर दी गई। भारत दूसरी बार आजाद हुआ। हम सलाखों के बाहर आये।



## प्रबोध पुस्तकालय की चढ़ते में हुयी थूर्णआत



अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। ग्राम चबूतरे में निरंजन फाउंडेशन द्वारा प्रबोध पुस्तकालय की शुरुआत की गई। सुदूरकांड के पाठ और मनमहक भवनों के पश्चात उद्घाटन का कार्यक्रम नरसंगमदास त्यारी महाराज और डा. सरजु प्रसाद पर गाँव के अनेक वरिष्ठजन और स्कूली बच्चे उपस्थित रहे।

### ई-श्रम कार्ड धारकों की मृत्यु या दिव्यांग होने पर मिलेगी आर्थिक मदद राशि

ललितपुर। श्रम प्रवर्तन अधिकारी डी.एमी.डी.जानकी दी गयी कि ई-श्रम कार्ड धारकों को द्वितीय द्वारा मृत्यु या दिव्यांग होने पर दावेदारों को श्रम एवं रोजगार मंत्रालय द्वारा मदद राशि दी जायेगी, दावेदारों को उनकी दशा के आधार पर खातपूरी राशि दी जायेगी। ई-श्रम कार्ड धारकों को द्वितीय द्वारा मृत्यु या दिव्यांग होने की धरणारूप मृतक के अधिकारों को दिलाई जायेगी, वहाँ दुर्घटना में दोनों आया, हाथ या पैर से दिव्यांग होने पर भी भारत सरकार की ओर से 20 लाख रुपये तक की धरणारूप अर्थात् श्रमिक रूप से चेटाइल/दिव्यांग होने पर 01 लाख रुपये तक की आर्थिक मदद की जायेगी। अतः ऐसे असंगठित कर्मकारों जो ई-श्रम पोर्टल पर 26 अगस्त 2021 से 31 मार्च 2022 तक पंजीकृत थे, उन अधिकारों वह आपकार दाता का ईंगिनियरों/इंजीनियरों के संक्रिया सदस्य नहीं होता है तो वह योजना हेतु पात्र होते, दावा प्राप्त करने के अनिम्न नियम श्रमिकों के बच्चों तथा कोविड-19 की महामारी के दौरान कोरोना काल में नियन्त्रित हुए बच्चों एवं अमुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (समाज) के अन्तर्गत पात्र बच्चों हेतु शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए कक्षा-06 में उपलब्ध कुल 140 सीट (70 बालक एवं 70 बालिकाएं) व

ललितपुर। मुख्य विकास अधिकारी नोडल अधिकारी अटल आवासीय विद्यालय प्रवेश परीक्षा द्वारा बेटक का आयोजन किया गया जिसमें जानकारी दी गयी कि उपर भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड (श्रम विभाग) द्वारा संचालित अटल आवासीय विद्यालय, ग्राम धोरां (जनपद ललितपुर) में जांसी मण्डल के जनपद जांसी, ललितपुर एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड की अंतिम तिथि 20 जनवरी 2025 निर्धारित की गयी है। जिलाधिकारी अवध्य त्रिपाटी द्वारा बताया गया कि अटल आवासीय विद्यालय ग्राम धोरां में पूर्ण रूप से संचालित है यह विद्यालय पूर्ण रूप से नियन्त्रित है यह विद्यालय पूर्ण रूप से नियन्त्रित है यह विद्यालय की तर्ज पर संचालित किया जा रहा है। विद्यालय में कक्षा 06 से लेकर कक्षा 12 तक के छात्र-छात्राओं को नियन्त्रित हुए बच्चों एवं अमुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (समाज) के अन्तर्गत पात्र बच्चों हेतु शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए कक्षा-06 में उपलब्ध कुल 140 सीट (70 बालक एवं 70 बालिकाएं) व

## नकल कराया तो एक करोड़ का जुर्माना व आजीवन कारावास

अवधनामा संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की 10वीं और 12वीं की परीक्षा 24 फरवरी से शुरू हो रही है जो 12 मार्च तक चलेगी। इसमें 54.38 लाख अधिकारी एजाम देंगे। इस बार इस परीक्षा में विशेष संबंधी जी जा रही है। इसमें नकल माफिया या साल्वरों पर इस बार सख्त संबंधी जी जा रही है। ऐसे लोगों पर कोई करोड़ रुपये तक का आपातकालीन कारोबार करने की ओर से कोई विवाद नहीं। ऐसे लोगों पर कोई करोड़ रुपये तक का आपातकालीन कारोबार करने की ओर से कोई विवाद नहीं। अतः उत्तर प्रदेश सर्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 1998 खल्म हो गया है। वर्ष 2025 की परीक्षा में उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 2024 लागू होगा। इसमें परीक्षा की शुक्रिया प्रभावित करने, प्रस्तुति लोक करने, प्रस्तुति ग्रहण करने के कारण तो नियमों से 14 वर्ष तक कारबास तथा 10 लाख रुपये तक के जुर्माने से दूरित किया जाएगा।

ललितपुर। बताया गया है। बोर्ड सचिव भगवती सिंह की ओर से सभी बेटियों अपर संवितों एवं बेटा जिला विद्यालय निरीक्षकों को जल्द नियंत्रण यारी देने की ओर से अधिकारी अवध्य त्रिपाटी ने वित्त दिवसालय मह में जनपद के संविताया बाहुल्य ग्राम धोरां एवं दारुतला में प्रश्नपत्र या उपर्युक्त कियारी भाग या प्रश्नपत्र की फोटोकापी एवं दारुतला में जन चौपाल लगाकर कराकर नकल करने की कोशिश करने पर अधिकारी एवं दारुतला में जन चौपाल लगाकर जीर्ण वैवरणी सर्वित करने के नियंत्रण दिये थे। उत्तर प्रदेश सर्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 1998 खल्म हो गया है। वर्ष 2025 की परीक्षा में उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 2024 लागू होगा। इसमें परीक्षा की शुक्रिया प्रभावित करने, प्रस्तुति लोक करने, प्रस्तुति ग्रहण करने के कारण तो नियमों से 14 वर्ष तक कारबास तथा 10 लाख रुपये तक के जुर्माने से दूरित किया जाएगा।

ललितपुर। बताया गया है। बोर्ड सचिव भगवती सिंह की ओर से सभी बेटियों अपर संवितों एवं बेटा जिला विद्यालय नियंत्रकों को जल्द नियंत्रण यारी देने की ओर से अधिकारी अवध्य त्रिपाटी ने वित्त दिवसालय मह में जनपद के संविताया बाहुल्य ग्राम धोरां एवं दारुतला में प्रश्नपत्र या उपर्युक्त कियारी भाग या प्रश्नपत्र की फोटोकापी एवं दारुतला में जन चौपाल लगाकर जीर्ण वैवरणी सर्वित करने के नियंत्रण दिये थे। उत्तर प्रदेश सर्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 1998 खल्म हो गया है। वर्ष 2025 की परीक्षा में उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 2024 लागू होगा। इसमें परीक्षा की शुक्रिया प्रभावित करने, प्रस्तुति लोक करने, प्रस्तुति ग्रहण करने के कारण तो नियमों से 14 वर्ष तक कारबास तथा 10 लाख रुपये तक के जुर्माने से दूरित किया जाएगा।

ललितपुर। बताया गया है। बोर्ड सचिव भगवती सिंह की ओर से सभी बेटियों अपर संवितों एवं बेटा जिला विद्यालय नियंत्रकों को जल्द नियंत्रण यारी देने की ओर से अधिकारी अवध्य त्रिपाटी ने वित्त दिवसालय मह में जनपद के संविताया बाहुल्य ग्राम धोरां एवं दारुतला में प्रश्नपत्र या उपर्युक्त कियारी भाग या प्रश्नपत्र की फोटोकापी एवं दारुतला में जन चौपाल लगाकर जीर्ण वैवरणी सर्वित करने के नियंत्रण दिये थे। उत्तर प्रदेश सर्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 1998 खल्म हो गया है। वर्ष 2025 की परीक्षा में उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 2024 लागू होगा। इसमें परीक्षा की शुक्रिया प्रभावित करने, प्रस्तुति लोक करने, प्रस्तुति ग्रहण करने के कारण तो नियमों से 14 वर्ष तक कारबास तथा 10 लाख रुपये तक के जुर्माने से दूरित किया जाएगा।

ललितपुर। बताया गया है। बोर्ड सचिव भगवती सिंह की ओर से सभी बेटियों अपर संवितों एवं बेटा जिला विद्यालय नियंत्रकों को जल्द नियंत्रण यारी देने की ओर से अधिकारी अवध्य त्रिपाटी ने वित्त दिवसालय मह में जनपद के संविताया बाहुल्य ग्राम धोरां एवं दारुतला में प्रश्नपत्र या उपर्युक्त कियारी भाग या प्रश्नपत्र की फोटोकापी एवं दारुतला में जन चौपाल लगाकर जीर्ण वैवरणी सर्वित करने के नियंत्रण दिये थे। उत्तर प्रदेश सर्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 1998 खल्म हो गया है। वर्ष 2025 की परीक्षा में उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 2024 लागू होगा। इसमें परीक्षा की शुक्रिया प्रभावित करने, प्रस्तुति लोक करने, प्रस्तुति ग्रहण करने के कारण तो नियमों से 14 वर्ष तक कारबास तथा 10 लाख रुपये तक के जुर्माने से दूरित किया जाएगा।

ललितपुर। बताया गया है। बोर्ड सचिव भगवती सिंह की ओर से सभी बेटियों अपर संवितों एवं बेटा जिला विद्यालय नियंत्रकों को जल्द नियंत्रण यारी देने की ओर से अधिकारी अवध्य त्रिपाटी ने वित्त दिवसालय मह में जनपद के संविताया बाहुल्य ग्राम धोरां एवं दारुतला में प्रश्नपत्र या उपर्युक्त कियारी भाग या प्रश्नपत्र की फोटोकापी एवं दारुतला में जन चौपाल लगाकर जीर्ण वैवरणी सर्वित करने के नियंत्रण दिये थे। उत्तर प्रदेश सर्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 1998 खल्म हो गया है। वर्ष 2025 की परीक्षा में उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 2024 लागू होगा। इसमें परीक्षा की शुक्रिया प्रभावित करने, प्रस्तुति लोक करने, प्रस्तुति ग्रहण करने के कारण तो नियमों से 14 वर्ष तक कारबास तथा 10 लाख रुपये तक के जुर्माने से दूरित किया जाएगा।

ललितपुर। बताया गया है। बोर्ड सचिव भगवती सिंह की ओर से सभी बेटियों अपर संवितों एवं बेटा जिला विद्यालय नियंत्रकों को जल्द नियंत्रण यारी देने की ओर से अधिकारी अवध्य त्रिपाटी ने वित्त दिवसालय मह में जनपद के संविताया बाहुल्य ग्राम धोरां एवं दारुतला में प्रश्नपत्र या उपर्युक्त कियारी भाग या प्रश्नपत्र की फोटोकापी एवं दारुतला में जन चौपाल लगाकर जीर्ण वैवरणी सर्वित करने के नियंत्रण दिये थे। उत्तर प्रदेश सर्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 1998 खल्म हो गया है। वर्ष 2025 की परीक्षा में उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अधिनियम 2024 लागू होगा। इसमें परीक्षा की शुक्रिया प्रभावित करने, प्रस्तुति लोक करने, प्रस्तुति ग्रहण करने के कारण तो नियमों से 14 वर्ष तक कारबास तथा 10















